260
945
H
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1239/10/8

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं॰ Acc. No. 945

891.431
B4986V

RECEIVED
10 DEC. 1930
DEPARTMENT

आज़ाद ग्रन्थमाला का तृतीयपुष्प।

बन्दे मातरम्

इस प्यारे काले सागर में आवेगा तूफान महान।
फट जायेंगे शासन बादल चमक उठेगा हिन्दुस्तान॥

वीरों की गर्जना !

संग्रहकर्ता

नारायन प्रसाद बिलथरे

प्रकाशक—

फूलचन्द जैन

पुस्तक विक्रेता
जवाहरगंज जबलपुर

प्रथमवार] १९३० ई० [मूल्य -)॥

बाबू सूरजभान गुप्त केसरी प्रेस, बेलनगंज आगरा।

प्रार्थना ।

प्रिय व्रज-जीवन वेगि पधारो ।
चक्रपाणि गिरिधर नटनागर मोहनि मूरति वारो ॥
प्रिय व्रज-जीवन० ।
अगणित भक्त विकल रोते हैं तिनकी व्यथा निहारो ।
झमझम वृष्टि विपति बरसति है गिरिधर गिर कर धारो ॥
प्रिय व्रज-जीवन० ।
कंस-अंश अरि रूप दासता देति हमें दुख भारो ।
प्रिय भारत के हित नटनागर अपना रूप सँभारो ॥
प्रिय व्रज-जीवन० ।
फिर निज चक्र संभारो हे हरि ! असुरन दल संहारो ।
हम दुखियन की विनय यही प्रभु भारत-भार उतारो ॥
प्रिय व्रज-जीवन० ।
कालिन्दी की रम्य तटी पर वर बंशी कर धारो ।
जै जै भारतवर्ष हमारा मुरली मांहि उचारो ॥
प्रिय व्रज-जीवन वेगि पधारो ।

जातीय संगीत ।

आप भी हमको न जो अपनायंगे ।
तो प्रभो ! किसकी शरण हम जायंगे ?
कब तलक आंसू पियेंगे मौन हो ।
कब तलक चुपचाप यों गम खायंगे ?

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 945
Date 27.12.71
GOVT. OF INDIA

यह कनाडा हो कि हो आस्ट्रेलिया ।
बैठने भी हम न दम भर पायँगे ?
गोरे जो हैं गर्म मुल्कों में बसे ।
क्या कभी यारो न यह सँवलायँगे ?
घेरे फिरते हैं जिसे देखो 'त्रिशूल' ।
देखें दुखिया लोग कब सुख पायँगे ?

ग़ज़ल ।

मुर्ग़ दिल मत रो यहाँ आँसू बहाना है मना ।
अंदलीबों को कफ़स में चहचहाना है मना ॥
हाय जल्लादी तो देखो कह रहा सैय्याद यह ।
वक़्त ज़िबहा बुलबुलों को फड़फड़ाना है मना ॥
वक़्त ज़िबहा जानवर को देते हैं पानी पिला ।
हज़रते इन्सान को पानी पिलाना है मना ॥
मेरे ख़ूँ से हाथ रँग कर बोले क्या अच्छा है रंग ।
अब हमें तो उम्र भर मरहम लगाना है मना ॥
अय मेरे ज़ख़्मे जिगर नासूर बनना है तो बन ।
क्या करूँ इस ज़ख़्म पर मरहम लगाना है मना ॥
ख़ूने दिल पीते हैं असग़र खाते हैं लख़्ते जिगर ।
इस क़फ़स में क़ैदियों को आबोदाना है मना ॥

तैयार हैं।

तैयार हैं जेल में चर्खा चलाने के लिये।
कटिबद्ध हैं हम मूंज की रस्सी बनाने के लिये॥
मंजूर सुर्खी कूटना कोल्हू चलाना है हमें।
तैयार हैं हम अध भुना दाना चबाने के लिये॥
कंबल बिछोने ओढ़ने में कष्ट ही है क्या हमें।
तैयार हैं हम भूमि को बिस्तर बनाने के लिये॥
निज धर्म पालन के लिये डर तोप गोले का कहाँ।
तैयार हैं आनन्दपूर्वक मृत्यु पाने के लिये॥
जब तक नहीं स्वाधीन भारत स्वर्गमें भी सुख नहीं।
तैयार हैं हम नर्क का भी कष्ट पाने के लिये॥

चर्खा-चक्र।

तुम्हारा चक्र मेशीनगन हमारा चक्र चर्खा है।
चलो चलने दो अब हम तुम बने हैं चक्रधर दोनों॥
दमन पर है तुम्हारी टेक हमारी भी है सहने पर।
न पीछे टालना पग अब बने हैं टेकधर दोनों॥
तुम्हें है गर्व यंत्रों का हमें भी आत्म बल का है।
नशे में चूर होकर अब बने हैं गर्वधर दोनों॥
सजा दे बन्द कर लो जेल में हम दुःख न मानेंगे।
बराबर अब तो हमने कर लिया है जेल घर दोनों॥

स्वतंत्रता ।

वतन की आबरूका पास देखें कौन करता है ।
सुना है आज मक़तल में हमारा इम्तहाँ होगा ॥
जुदा मत हो मेरे पहलू से अय दर्दे वतन हरगिज़ ।
न जानें बादे मुर्दन में कहाँ और तू कहाँ होगा ॥
शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले ।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा ॥
इलाही वह भी दिन होगा जब अपना राज्य देखेंगे ।
जब अपनी ही ज़मीं होगी और अपना आसमां होगा ॥

———

गुलामी ।

बुलबुल यहां न गावो, तरसाये हुये हैं ।
गुल हिंद के चमन में, मुरझाये हुये हैं ॥
हस्ती हमारी जब तक, क़ायम रही चमन में ।
इज़्ज़त रही तुम्हारी, ठुकराये हुये हैं ॥
ग़ैरों ने घुसके अन्दर, कब्ज़ा किया वतन पर ।
सब ज़र ज़मी खज़ाना, लुटवाये हुये हैं ॥
पहिना के मुद्दतों से, ये तौक़ गुलामी का ।
बैठा दिया यहाँ पर, घबराये हुये हैं ॥
देखा कभी ज़बां से, आज़ाद लफ्ज़ निकाला ।
घर द्वार माल अपना, छिनवाये हुये हैं ॥
आफत पड़ी हुजूर पे, दुश्मन को सिर चढ़ा के ।
कई लाख वीर भाई, कटवाये हुये हैं ॥

अपनी मुसीबतों को, ज़ाहिर करें अगर हम।
तोपें मशीनगन से, उड़वाये हुये हैं॥
ज़ाहिर हो शान जिससे, सब पर हुजूर की ये।
स्कूल के मदारिस, पिटवाये हुये हैं॥
गर मुल्क की ये खिदमत, करने को हों खड़े हम।
पकड़ा के जेल में हां, सड़वाये हुये हैं॥
भूखों मरें यहां हम, रफ्तानगी वहां हो।
गैरों को मुल्क का सब, भिजवाये हुये हैं॥
कब तक रहेंगे सहते, बतला मेरे खुदाया।
हम मुद्दतों से दिल को, समझाये हुये हैं॥
अब चीख से हमारी, होगा बिनाश तेरा।
रहबर की बात गांधी अपनाये हुये हैं॥

कविता—यदि देश हित मरना पड़े मुझको सहस्रों बार भी।
तो भी न मैं इस कष्ट को निज ध्यान में लाऊं कभी॥
हे ईश भारतवर्ष में शत बार मेरा जन्म हो।
कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो॥
मरते बिस्मिल, रोशन, लहरी, अशफाक अत्याचार से।
होंगे पैदा सैकड़ों इनके रुधिर की धार से॥
उनके प्रबल उद्योग से उद्धार होगा देश का।
तब नाश होगा सर्वथा दुख शोक के लवलेश का॥

गज़ल—चाह नहीं है सुर बाला के गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं है प्यारी के गल पड़ू हार में ललचाऊँ॥
चाह नहीं है राजाओं के शव पर मैं ढाला जाऊँ।
चाह नहीं है देवों के शिर चढ़ भाग्य पर इतराऊँ॥

मुझे तोड़ कर हे बनमाली उस पथ में तू देना फेंक ।
मातृ भूमि हित शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक ॥

रुबाई

मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे ।
बाक़ी न मैं रहूँ न मेरी आरजू रहे ॥
जब तक कि तन में जान रगों में लहू रहे ।
तेरा ही जिक्र लबपे तेरी जुस्तजू रहे ॥

चर्खे से ।

जो बिगड़ा है कभी का वह बनेगा देख चरखे से ।
भारतवासियों का तो हटेगा क्लेश चरखे से ॥
मिलेगी दीन भारत को फ़क़त इमदाद चरखे से ।
ये तेरी क़ैद से होगा वतन आज़ाद चरखे से ॥
गर चीख़ से हमारी गरदूं हिला न होता ।
तो आज हमको रहबर गांधी मिला न होता ॥
पैदा न होता डायर तो बने न बाग जलियां ।
हिन्दोस्तां के दिल का छाला छिला न होता ॥
जाता न गर उजाड़ा यह गुजिश्तां हमारा ।
तो तर्क मवा लाती गुल भी खिला न होता ॥
गर शान के नशे में बद मस्त तू न होता ।
गिरने का आज तेरे यों सिलसिला न होता ॥
गर बेगुनाह होकर हम मर मिटे न होते ।
गुलजार हमको तेरा हरगिज़ मिला न होता ॥

चर्ख़ा ।

मेरी माताओ चर्ख़ा चलालो ।
लाज भारत की अब तुम बचालो ॥
छोड़ चर्ख़ा जो तुमने दिया है ।
घेर पापों ने हमको लिया है ॥
उनके पंजे से हमको छुड़ालो ।
मेरी माताओ चर्ख़ा चलालो ॥
किया चर्ख़े से तुमने किनारा ।
लुट गया इससे सब धन हमरा ॥
अब जो बाक़ी है इसको बचालो ।
मेरी माताओ चर्ख़ा चलालो ॥
मानचस्टर के सब कारखाने ।
लूट कर भर रहे हैं खज़ाने ॥
उनकी जेबों से धनको निकालो ।
मेरी माताओ चर्ख़ा चलालो ॥
भरदी तुमने जो गैरों की झोली ।
बन गई उससे बन्दूक गोली ॥
तुम भी चर्ख़ों की तोपें बनालो ।
मेरी माताओ चर्ख़ा चलालो ॥
कपड़े धारण करो तुम स्वदेशी ।
फूंक दो आज कपड़े विदेशी ॥
हुक्म गांधी जी का अब बजालो ।
मेरी माताओ चर्ख़ा चलालो ॥
तुमको गांधी जी बतला रहे हैं ।
राग 'अख़्तर' यह सब गा रहे हैं ॥
डूबती नव अपनी तरालो ।
मेरी माताओ चर्ख़ा चलालो ॥